

Roll No.

21391

B. A. (Pass Course & Vocational)

Sanskrit 2nd Semester

Examination – May, 2019

SANSKRIT (ELECTIVE)

Paper : SKT-II

Time : Three hours]

[Maximum Marks : 80

प्रश्नों के उत्तर देने से पहले परीक्षार्थी यह सुनिश्चित कर लें कि उनको पूर्ण एवं सही प्रश्न-पत्र मिल रहा है। परीक्षा के उपरान्त इस संबंध में कोई भी शिकायत नहीं सुनी जायेगी।

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं दस वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : $10 \times 1 = 10$
 - (i) सीता और गीता जाती हैं।
 - (ii) कंस कृष्ण पर क्रोध करता है।
 - (iii) गुरु को नमस्कार है।
 - (iv) दुष्ट को धिक्कार है।
 - (v) नगर के बाहर बगीचा है।
 - (vi) वह दिल्ली गया।

21391

- (vii) सीमा ने गीत गया।
- (viii) माता खाना पकाती है।
- (ix) मोहन गेंद से खेलेगा।
- (x) शोर मत करो।
- (xi) वृक्ष से फल गिरते हैं।
- (xii) यह मेरा पुत्र है।
- (xiii) बालक कान से बहरा है।
- (xiv) आप दो पढ़ें।
- (xv) वे सब पेढ़ेंगी।

2. किन्हीं दो कण्ठस्थ श्लोकों का शुद्ध लेखन कीजिए। $2 \times 2 = 4$
3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पद्यों का सरलार्थ कीजिए : $2 \times 4 = 8$
 - (i) दुःशासनपरामृष्टा सम्भ्रमोत्फुल्ललोचना।
राहुवक्रान्तरगता चन्द्रलेखेव शोभते।।
 - (ii) दुष्टवादी गुणद्वेषी शठः स्वजननिर्दयः।
सुयोधनो हिमां दृष्ट्वा नैव कार्यं करिष्यति।।
 - (iii) देवात्मजैर्ननुष्याणां कथं वा बन्धुता भवेत्।
पिष्टपेषणमेतावत् पर्याप्तं छिद्यतां कथा।
4. किन्हीं दो गद्यांशों का सरलार्थ कीजिए : $2 \times 4 = 8$
 - (i) कुसुमशरशरप्रहारजर्जरिते हि हृदये जलमिव गलत्युपदिष्टम्। अकारणं च भवति दुष्कृतोत्तरेन्वयः श्रुतं वा

P. T. O.

(2)

विनयस्य। चन्दन-प्रभवो न उहति किमनलः ? किं प्रशमहेतुनापि न प्रचण्डतरी भवति वऽवानलो वारिणा गुरुपेदशस्य नाम पुरुषाणां खिलमलप्रक्षालनक्षममज्जानानम्, नोद्वेगकरः प्रजागरः। विशेषेण तु राज्ञाम्। विरहि तेशामुपदेष्टारः।

- (ii) न हि तं पश्यामि यो ह्यपरिचितयानया न निर्भरमुपगूढ, वा न विलतब्धः नियतमियमालेख्यगतापि चर्चा पुस्तमय्यपीन्द्रजालमाचरति, उत्कीर्णापि विप्रलभश्रुताप्तभिसंधत्ते, चिन्तितापि वञ्चयति।
- (iii) आज्ञामपि दरदानं मन्यन्ते। सशमपि पावन-भाकलयन्ति मिश्रामाहात्म्यगर्वनिर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः, पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्या नार्चयन्त्यर्चनीयान्, नाभावैवाद्यन्त्यभिवादनार्हा नाभ्युतिष्ठन्ति शुरुन्, आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूर्याः सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादाने।

5. 'दूतवाक्यम्' के आधार पर दूर्योधन का चरित्र-चित्र कीजिए।

अथवा

'शुकनासोपदेशः' के आधार पर शुकनास का चरित्र-चित्र कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के सम्पूर्ण रूप लिखिए : $2 \times 5 = 10$

दण्डिन्, इदम् (पुल्लिंग), युष्मद्, त्रि

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो धातुओं के पूछे गए दो लकारों में सम्पूर्ण रूप लिखिए : $2 \times 5 = 10$
सेव् (लट्, लोट्), मुद् (लङ्ग, लृट्), नी (लोट्, विधिलिङ्ग), कृ (लट्, लृट्)।
8. हल् सन्धि अथवा विसर्ग सन्धि की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए। 5
9. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रयोगों में सन्धि/सन्धिछेद कीजिए : $5 \times 1 = 5$
षडाननः, मुनिः + गच्छति, सच्चरित्रम्, वागीशः, उत् + वारणम्, सज्जनः, तत् + लीनः, कश्चित्।
10. निम्नलिखित में से किसी एक छन्द का लक्षण और उदाहरण लिखिए : $1 \times 6 = 6$

वंशस्थ, मन्दाक्रान्ता

11. गणविह्वल लगाकर छन्द का नाम लिखिए : 6

- (i) तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयां
वने व्याधैः सार्धं सुचिरमुषितं वल्कलधरैः।
विराटस्यावासे स्थितमनुचितारम्भा-निमृतं
गुरुः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यपि कुरुषु॥

अथवा

पवित्रमत्रातनुते जगद्युगे स्मृता रसक्षालनयेव यत्कथा।
कथं न सा मद्गिरमाविलामपि स्वसेविनीमेव
पवित्रयिष्यति॥